UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180714
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 82 T65B Accession No. P. G. H439

Author टाल्स्टाय

Title बालकों का विवेक. अनु. रामनाथ 'सुमन'. 1947.

This book should be returned on or before the date last marked below.

बालकों का विवेक

[टाल्स्टाय के Wisdom of Children का अनुवाद]

श्री रामनाथ 'सुमन'

सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली।

प्रथम बार : १९४७
मूल्य
बारह आना

मुद्रक
अमरचंद्र
राजहंस प्रेस,
दिल्ली, २१-४७।

निवेदन

टाल्स्टाय ने ये नाटक बालकों के लिए अपने जीवन के अंतिम दिनों में लिखे थे। इनको वे दोहरा भी नहीं सके। बालकों के मानस को समझकर उन पर प्रयोग करने के विचार से इनको लिखा था। रूस के बालकों का शिक्षा का मान (Standard) और हमारे यहाँ के बालकों की शिक्षा के मान में अंतर है। जिस वय के बालक वहाँ किसी भी विषय को गंभीर पहलू से देखने की कोशिश करते हैं उस वय के हमारे बालक बहुत बातों से नावाकिफ़ पाये जाते हैं। हमें आशा है कि यह संग्रह हमारे बालकों और उनके अभिभावकों को पसंद आयेगा और टाल्स्टाय ने जिस दृष्टिकोण से इन्हें लिखा है उसे समझकर बालकों के मनोविज्ञान का हम अध्ययन कर सकेंगे।

——प्रकाशक

विषय-सूची

१.	धर्म	१
२.	युद्ध	३
३.	मातृभूमि—स्वदेश-राज्य	५
४.	टैक्स	७
५.	निन्दा	१०
६.	दया	१२
७.	नशा	१५
८.	मृत्यु-दण्ड	१६
९.	जेल	२४
१०.	सम्पत्ति	२८
११.	अपनी हानि करने वालों को प्यार करना	३३
१२.	अखबार	३६
१३.	पश्चात्ताप	४०
१४.	कला	४३
१५.	विज्ञान	४८
१६.	मुकदमेबाज़ी	५२
१७.	अपराध और दण्ड	५५
१८.	निजी सम्पत्ति	५७
१९.	बच्चे	६०
२०.	शिक्षा	६५

बालकों का विवेक

: १ :

धर्म

एक बच्चा और उसकी मां

बच्चा—माँ दाई ने आज अच्छे-अच्छे कपड़े क्यों पहने हैं, और मुझे यह नई कमीज क्यों पहनाई है ?

मां—इसलिए कि आज छुट्टी और त्यौहार का दिन है और हम लोग गिरजाघर—प्रार्थना करने—जायंगे।

बच्चा—आज कौन-सा त्यौहार है ?

मां—स्वर्गारोहण-दिवस है।

बच्चा—'स्वर्गारोहण' का क्या मतलब होता है, माँ ?

मां—इसका मतलब यह है कि हमारे प्रभु ईसामसीह स्वर्ग की ओर आरोहण कर गये।

बच्चा—'आरोहण' से क्या मतलब है ?

मां—इसका मतलब यह है कि वे ऊपर की ओर चले गये।

बच्चा—वे कैसे ऊपर गये माँ ? क्या डैनों से ?

मां—नहीं डैनों से नहीं। वे यों ही ऊपर चले गये क्योंकि वे ईश्वर हैं और ईश्वर सब कुछ कर सकता है।

बच्चा—पर वे गये कहाँ ? पिता जी तो मुझसे कह रहे

थे कि यह आसमान सिर्फ खाली जगह है । उसमें तारों के सिवा कहीं कुछ नहीं है, और तारों के आगे फिर दूसरे तारे हैं और जिसे हम आसमान कहते हैं, उसका कहीं अन्त नहीं है । तब वे कहाँ गये ?

माँ—(मुस्कराती हुई)—हर आदमी हर बात नहीं समझ सकता । उसे श्रद्धा भी रखनी चाहिए !

बच्चा—श्रद्धा किस चीज़ में ?

माँ—जो कुछ बड़े-बूढ़े कहते हैं, उसमें ।

बच्चा—लेकिन जब मैंने कहा कि नमक बिखर गया है, इसलिए किसी की मौत होने वाली है, तब तुम्हीं ने कहा था कि इन मूर्खतापूर्ण बातों का विश्वास नहीं करना चाहिए ।

माँ—हाँ, तुम्हें किसी वाहियात बात में विश्वास नहीं करना चाहिए !

बच्चा—पर मुझे कैसे मालूम होगा कि कौन-सी बात वाहियात या मूर्खतापूर्ण है और कौन-सी नहीं ?

माँ—तुम्हें सच्चे धर्म में विश्वास रखना चाहिए ।

बच्चा—पर सच्चा धर्म है क्या ?

माँ—हमारा धर्म (जरा मुंह एक तरफ मोड़ कर) मैं समझती हूँ, कि मैं निरर्थक बातें कर रही हूँ । (जोर से) जाओ, पिता जी से कहो कि चलने का समय हो गया है, और अपनी चादर ओढ़ लो ।

बच्चा—क्या हमें प्रार्थना के बाद मिठाई मिलेगी ?

: २ :

युद्ध

कार्लशेन श्मिर — ६ बरस की उम्र

पेटया ग्रार्लोव — १० बरस की उम्र

माशा ग्रार्लोवा — ८ बरस की उम्र

कार्लशेन—हमारा प्रशा रूसियों को हमसे जमीन नहीं लेने देगा !

पेटया—पर हम कहते हैं कि जमीन हमारी ह, क्योंकि हमने इसे पहले विजय किया है ।

माशा—'हम' कौन हैं ?

पेटया—तुम अभी बच्ची हो और समझती नहीं । 'हम' का मतलब 'हमारे देश के लोग हैं ।'

कार्लशेन—सब जगह ऐसी ही बात है । कुछ आदमी एक देश के होते हैं, कुछ दूसरे देश के ।

माशा—मैं किस देश की हूँ ?

पेटया—हम सब की तरह तुम भी रूस की हो ।

माशा—पर मैं वहाँ की न होना चाहूँ तो ?

पेटया—चाहो या न चाहो, तुम रूसी हो । और हर देश का अपना ज़ार या बादशाह होता है ।

कार्लशेन—(बाधा देकर)—या पार्लमेण्ट......

पेटया—हर एक की अपनी सेना होती है, और हर एक

अपने आदमियों से टैक्स वसूल करता है।

माशा—पर वे एक-दूसरे से इतने अलग क्यों हैं।

पेटया—तुम क्या कहती हो ? हर एक देश दूसरे से भिन्न है।

माशा—पर वे एक-दूसरे से इतने अलग क्यों है ?

कार्लशेन—ओह, इसलिए कि हर आदमी अपनी ही पितृ-भूमि को—अपने ही देश को—प्यार करता है।

माशा—मै नही समझ पाती कि वे अलग-अलग क्यों है ? क्या सब मिलकर रहें तो यह ज्यादा अच्छी बात न होगी ?

पेटया—खेल खेलने मे साथ होना जरूर अच्छी बात है, पर यह खेल नही है, यह एक महत्त्वपूर्ण विषय है—एक बड़ी बात है।

माशा—मुझे तो कुछ समझ में नही आता।

कार्लशेन—जब तुम बड़ी हो जाओगी, तब समझ सकोगी।

माशा—तब मै बड़ी होना नही चाहती।

पेटया—तुम अभी छोटी हो। पर अभी से रूठने लगती हो जैसी कि सब लड़कियाँ होती है।

: ३ :

मातृभूमि : स्वदेश–राज्य

गवरीला––एक सेवक और रिज़र्व सैनिक

माशा––इसके (गवरीला के) मालिक का छोटा लड़का

गवरीला––मेरे प्यारे छोटे मालिक मीशेका, मै अब जा रहा हूँ। पता नही कि ईश्वर पुनः हमें कभी मिलायगा या नही।

मीशा––क्या तुम सचमुच जा रहे हो ?

गवरीला––हाँ, निश्चित रूप से । लड़ाई फिर शुरू होगई है, और मै रिजर्व सैनिक हूँ ।

मीशा––किसके साथ लड़ाई है ? कौन किसके खिलाफ लड़ रहा है ?

गवरीला––दैव जान ! मेरे लिए यह जानना मुश्किल है । मैंने अखबारों मे इसकी बाबत पढ़ा है, लेकिन सब बातें मेरी समझ मे नही आई । वे कहते हैं कि आस्ट्रिया इस पर नाराज़ है कि हमने उन लोगों का साथ दिया––अरे, मै नाम भूला जा रहा हूँ. . . .

मीशा––लेकिन तुम क्यों जा रहे हो ? अगर जारों–बादशाहों–मे झगड़ा है, तो उन्हें लड़ने दो ।

गवरीला––मै कैसे रुक सकता हूँ ? जार, मातृभूमि स्वदेश और सनातन धर्म के लिए मुझे जाना ही पड़ेगा ।

मीशा––लेकिन तुम्हारी इच्छा तो जाने की नहीं है ?

गवरीला—ऐसा कौन है जो स्त्री और बच्चों को छोड़कर जाना चाहेगा ? और फिर ऐसी अच्छी जगह छोड़कर मैं क्यों जाना चाहूँगा ?

मीशा—तब तुम क्यों जाते हो ? उनसे कह दो कि मैं नहीं जाना चाहता, और मै न जाऊँगा। वे क्या कर लेगे ?

गवरीला—(हँसता है)—वे क्या करेंगे ? ज़बर्दस्ती मुझे ले जायंगे !

मीशा—पर तुम्हें घसीट कर कौन ले जायंगे ?

गवरीला—क्यों ! मेरे-जैसे आदमी, आदमी जिनको हुक्म दिया जायगा ?

मीशा—पर जब वे तुम्हारे ही जैसे आदमी है, तब तुम्हें घसीट कर क्यों ले जायंगे ?

गवरीला—यह सेनापतियों, फौजी अफसरों का हुक्म है। हुक्म देते ही आदमी घसीट कर ले जाये जाते है।

मीशा—लेकिन अगर वे भी इन्कार कर दे ?

गवरीला—वे ऐसा नही कर सकते।

मीशा—क्यों नहीं कर सकते ?

गवरीला—क्यों ? इसलिए...इसलिए कि यह कानून है।

मीशा—किस तरह का कानून ?

गवरीला—तुम अचम्भे की बातें करते हो ! अच्छा, अब तुमसे बातें करते काफी देर हो गई। आखिरी बार यहाँ चाय तैयार करने का समय हो गया है।

: ४ :

टैक्स

अमीन—टैक्स वसूल करने वाला अफसर

ग्रुश्का—सात वर्ष की एक लड़की

(अमीन एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में प्रवेश करता है। वहाँ सात साल की लड़की ग्रुश्का के सिवा और कोई नहीं है। अमीनचारों तरफ देखता है)

अमीन—क्या अन्दर कोई नही है ?

ग्रुश्का—माँ गाय को लेकर गई हैं, और पिताजी मालिक की चौपाल पर होंगे।

अमीन—अच्छा, अपनी माँ से कह देना कि अमीन साहब आये थे। कहना कि यह तीसरी बार आ चुके, और अगर वह रविवार तक टैक्स के रुपये नहीं दे देती, तो मैं गाय ले लूँगा।

ग्रुश्का—तुम हमारी गाय ले लोगे ? क्या तुम चोर हो ? हम तुम्हें उसे लेने न देंगे।

अमीन—(मुस्कराते हुए) वाह, तुम तो बड़ी चतुर लड़की हो ! तुम्हारा नाम क्या है ?

ग्रुश्का—ग्रुश्का।

अमीन—अच्छा ग्रुश्का तुम अच्छी और तेज़ छोटी लड़की हो। लेकिन मेरी बात सुनो ! अपनी माँ से कह देना कि मैं गाय ले जाऊँगा—यद्यपि मैं चोर नहीं हूँ।

ग्रुश्का—जब तुम चोर नहीं हो, तो हमारी गाय क्यों ले जाओगे ?

अमीन—इसलिए कि कानून जो कुछ माँगता है, उसे चुकाना ही पड़ेगा। मैं टैक्स के बदले तुम्हारी गाय ले लूँगा।

ग्रुश्का—टैक्स से तुम्हारा क्या मतलब है ?

अमीन—तुम तो बड़ी चालाक लड़की मालूम पड़ती हो। टैक्स क्या है ? ज़ार अपनी रिआया को जो कुछ देने, अदा करने का हुक्म देते हैं, वही टैक्स है।

ग्रुश्का—किसे अदा करने को ?

अमीन—किसे ? अरे खुद ज़ार को। और फिर वे तय करते है कि वह रुपया किस काम मे खर्च हो।

ग्रुश्का—पर क्या जार गरीब हैं ? हम गरीब हैं और वह मालदार हैं। तब फिर वह हम से टैक्स क्यों लेते हैं ?

अमीन—अरी मूर्ख ! वह अपने लिए यह रक़म नही लेते। उन्हें हमारे लिए, हमारी आवश्यकताओं के लिए, अफसरों के लिए, फौज के लिए, शिक्षा के लिए—हमारी ही भलाई के लिए इसकी जरूरत पड़ती है।

ग्रुश्का—अगर तुम हमारी गाय ले जाओगे, तो हमारा क्या भला होगा ? हमारा तो कोई भला न होगा।

अमीन—जब तुम बड़ी हो जाओगी, तब इसे समझोगी। अच्छा, जो कुछ मैंने कहा है, अपनी माँ से कह देना। भूलना नहीं।

ग्रुश्का—मैं ऐसी वाहियात बातें उससे नहीं कहूँगी। अगर

तुम्हें या ज़ार को किसी चीज़ की ज़रूरत हो, तो खुद काम करके पैदा करो और हमें जिसकी ज़रूरत होगी, हम उसे करेंगे।

अमीन--आह, यह लड़की बड़ी होकर ज़हर में बुझी निकलेगी।

: ५ :

निन्दा

मितिया—अवस्था १० वर्ष

इल्यूशा—अवस्था ८ वर्ष

सोनिया—अवस्था ६ वर्ष

मितिया—मैंने पीतर सेमिनोविख से कहा कि हम लोग बिना कपड़े रहने की आदत डाल सकते हैं। उसने कहा—ऐसा नहीं हो सकता। तब मैंने उसे बताया कि माइकेल इवानोविख का कहना है कि जैसे हमारे मुह को बहुत दिनों से खुले रहने के कारण ठंड बर्दाश्त करने की आदत पड़ गई है, उसी प्रकार हम अपने सारे शरीर में सहने की शक्ति बढ़ा सकते हैं। पीतर कहता है—'तुम्हारा माइकेल इवानोविख गधा है!' (हँसता है) और अभी कल ही माइकेल इवानोविख ने मुझ से कहा : 'पीतर सेमिनोविख बहुत झूठ बोलता है, लेकिन एक गधे–मूर्ख–से और उम्मीद ही क्या की जा सकती है?' (हँसता है)

इल्यूशा—मैं तो उससे कहती—'तुम उसके बारे में गंदी बातें करते हो; वह तुम्हारे बारे में गंदी बातें करता है।'

मितिया—लेकिन सच्ची बात यह है कि पता नहीं दोनों में कौन गधा—मूर्ख—है।

सोनिया—दोनों गधे हैं। जो दूसरे को गधा–मूर्ख–कहता

है, खुद गधा है ।

इल्यशा––ओह ! अभी तुमने दोनों को गधा कहा है, इसलिए तुम भी वही हो !

मितिया––मुझे अच्छा नही मालूम होता कि दोनों एक दूसरे की पीठ पीछे एक दूसरे को गधा कहें । जब मै बड़ी होऊँगी, मै ऐसा नही कहूँगी । मैं किसी के बारे में जो कुछ सोचती हूँ, वह उसके मुँह पर कहूँगी ।

इल्यूशा––मै भी ऐसा ही करूँगी ।

सोनिया––और मै अपने को अपने तक ही रखूँगी ।

मितिया––इसका क्या मतलब ?

सोनिया––मेरा मतलब यह है कि मैं किसी के बारे में जो कुछ सोचती हूँ, वह तभी कहूँगी, जब मैं वैसा चाहूँगी और जब मैं न चाहूँगी तो न कहूँगी ।

इल्यूशा––इससे मालूम होता है कि तुम भी गधी हो ।

सोनिया––अभी तुमने कहा था कि तुम किसी के बारे में गंदी बातें न करोगी ।

इल्यूशा––ओह ! पर मैंने ऐसा तुम्हारी पीठ पीछे तो नहीं कहा ।

: ६ :

दया

माशा } दो बच्चे
मीशा }

बूढ़ी औरत

(माशा और मीशा अपने घर के सामने, अपनी गुड़ियों के लिए झोंपड़ी बनाने में लगे है)

माशा—(मीशा से गुस्से में) नहीं, इस तरह, नहीं। मूर्ख ! वह लकड़ी वहाँ से हटा ले।

बूढ़ी औरत—(बाहर की ड्योढ़ी के पास पहुँच कर बड़बड़ाती है) प्रभु उसका भला करे, वह बिलकुल देवी है ! हरएक के प्रति दया से भरी हुई।

(बच्चे खेलना बन्द कर बूढ़ी औरत की ओर देखते है)

मीशा—तुम किसके बारे मे कह रही हो ?

बूढ़ी औरत—तुम्हारी माँ को। वे ईश्वर को याद रखती हैं और हम गरीब दुखियों पर दया करती हैं। उन्होंने अभी-अभी मुझे एक लहंगा, कुछ चाय और रकम दी है। ईश्वर और स्वर्ग की रानी उनपर कृपा करें। वह उधर रहने वाले उस दुष्ट की भाँति नहीं हैं, जो कहता है—तुम जैसी कितनी ही घूमती-फिरती हैं। उसके कुत्ते इतने खूँख्वार हैं कि पूछो मत। मैं मुश्किल से उनसे जान बचाकर निकल सकी।

माशा--यह आदमी कौन है ?

बूढ़ी औरत--कलवरिया के सामने रहने वाला। आह ! वह बड़ा निर्दय है। होने दो ! मैं इस देवी की अहसानमंद हूँ, जिसने मेरी विपता में मुझे मदद दी और आराम पहुँचाया। अगर दुनिया में ऐसे लोग न हों तो हम लोग कैसे जियें ?

(रोती है)

माशा और मीशा--हाँ वह बडी दयावती है।

बूढ़ी औरत--जब तुम बड़ी होना तो उसकी तरह होना। गरीब-दुखियों को न भूलना, तब ईश्वर भी कभी तुम्हें न भूलेगा। (जाती है)

मीशा--बेचारी गरीब बुढ़िया !

माशा--मुझे खुशी है कि माँ ने उसे कुछ दिया।

मीशा--मुझे समझ में नही आता कि जब हमारे पास बहुत-सा सामान है, तो हम क्यों न दे ? हमें जरूरत नही और उसे जरूरत है।

माशा--तुम्हें याद होगा कि साधू जॉन ने कहा है--'जिसके पास दो कोट हों, वह एक दे दे !'

मीशा--हाँ जब मैं बड़ी होऊँगी तो सब कुछ दे दूँगी।

माशा--तुम ऐसा नही कर सकती !

मीशा--क्यों नही ?

माशा--तब तुम्हारा क्या होगा ?

मीशा--मेरे लिए एक ही बात है। अगर हम हर एक के प्रति दयालु हों; तो सब कुछ ठीक हो जायगा।

(अपना खेल छोड़कर बाल-शिक्षण-गृह मे जाती है। नोटबुक से एक पन्ना फाड़कर उस पर कुछ लिखती है और अपनी जेब में रख लेती है। पन्ने पर लिखा हुआ था : 'हमें दयालु होना चाहिए।')

: ७ :

नशा

मकर्का--आयु १२ वर्ष
मार्फुत्का--आयु ६ वर्ष
पावलुश्का--आयु १० वर्ष
शिक्षक

(मकर्का और मार्फुत्का एक मकान से निकल कर गली में आती है। मार्फुत्का क्रदन कर रही है। बगल के एक मकान के दरवाजे की सीढ़ियो पर पावलुश्का खड़ी है।)

पावलुश्का--अरे, तुम इतनी रात को यहाँ क्या कर रही हो ?

मकर्का--अरे, वह फिर नशे मे पगला रहे है।

पावलुश्का--कौन, प्रोखीर काका ?

मकर्का—और कौन होगा ?

मार्फुत्का--वह माँ को मार रहे है।

मकर्का--मै अब अन्दर न जाऊँगी। वह मुझे भी मारगे (ड्योढ़ी पर बैठ जाती है) मै यही रात बिता दूँगी; मैं अन्दर न जाऊँगी।

(चुप्पी। मार्फुत्का जोर से रोती है)

पावलुश्का—चुप रह भाई, चुप रह ! रोने से फायदा

क्या होगा। बोल हमारा क्या वश है ? जा, मैं कहती हूं जा।

मार्फुत्का––(आँसू ढलकाते हुए) यदि मैं जार होती तो मैं उनकी कसकर खबर लेती जो उन्हें वोदका[1] पिलाते हैं। मैं किसी को वोदका बेचने ही न देती।

मकर्का—बहुत खूब ! अरे, खुद जार ही तो वोदका बिकवाता है। वह दूसरों को बेचने से रोकता ही इसलिए है कि उसकी आमदनी न मारी जाय।

पावलुश्का––गप्पी कहीं की।

मकर्का––गप्पी ! कैसे ? जा जरा पूछ तो कि अकूलिना को कैद क्यों हुई ? इसीलिए तो कि उसने बिना लाइसेंस लिये वोदका बेची और जार का नुकसान हुआ।

पावलुश्का––सचमुच इसीलिए सजा हुई ? वे लोग तो कहते थे कि उसने कोई गैरकानूनी काम किया था....

मकर्का––हाँ, दूसरा क्या गैर कानूनी, यही कि लायसेंस लिये बिना वोदका बेची।

मार्फुत्का––मैं तो इसे किसी को बेचने न दूंगी। वोदका से सब तरह से नुकसान ही नुकसान है। वैसे तो वह कभी-कभी ठीक भी रहते हैं, पर जब नशे में पागल हो जाते हैं, तो सबको बुरी तरह मारते हैं।

पावलुश्का––तू अजीब बात करती है। मैं कल अपने मास्टर से पूछूँगी। उनको सब मालूम होगा।

मकर्का––ठीक है, पूछना।

---

१ गेहूं से बनाई हुई एक प्रकार की रूसी मदिरा।

(दूसरे दिन मकर्का के पिता प्रोखोर रात भर नशे में सोने के बाद, होश होने पर उठकर, जिस कुत्ते ने उन्हें काटा था उसका एक बाल लेने बाहर चले गये है । मकर्का की माँ, जिसकी आँखें सूजी हुई और लाल होरही है आटा गूँध रही है । बच्चे अभी तक जगे नही है शिक्षक बाहर के बरामदे में बैठा तंबाकू पी रहा है—बच्चे स्कूल मे प्रवेश कर रहे है ।)

पावलुश्का—(शिक्षक के पास जाकर) यूजेनीसेमिजिख, बताइये····कल किसी ने मुझे बताया कि जार वोदका का रोजगार करता है किंतु अकूलिना को वही काम करने के लिए कैद हो गई । क्या यह सच है ?

शिक्षक—जिस किसी ने तुमसे यह बात कही वह गधा था और तुमने उसकी बात का विश्वास किया यह तुम्हारी बेवकूफी है । ज़ार कोई रोजगार नही करता, इसीलिए तो वह ज़ार है । अकूलिना को बिना लायसेंस लिये वोदका बेचने और यों सरकारी खजाने को नुकसान पहुँचाने के जुर्म में कैद हुई ।

पावलुश्का—उसने नुकसान कैसे पहुँचाया ?

शिक्षक—इसलिए कि शराब पर आबकारी कर लगा हुआ है । जिस शराब पर सरकारी लागत दो रुपया पड़ती है उसे वह लगभग साढ़े आठ रुपये में बेचता है । इस तरह जो मुनाफा है वह सरकारी आमदनी के रूप में खजाने में जाता है । और यह आमदनी बहुत बड़ी है—करोड़ों तक पहुँचती है ।

पावलुश्का—मतलब यह कि जितना ही वोदका खर्च होगी उतनी ही ज्यादा आमदनी होगी ?

शिक्षक--जरूर ही। अगर इस तरह आमदनी न हो तो फौज और स्कूलों के लिए और हमारी अन्य आवश्यकताओं के लिए काफी रकम कहाँ से आवे।

पावलुश्का--लेकिन जब हर आदमी को इन चीजों की ज़रूरत है तो वे हमसे सीधे पैसे क्यों नही वसूल कर लेते ?

शिक्षक--'वोदका बेचकर क्यों ?' इसलिए कि वैसा ही कानून है। अच्छा बच्चो; अब तुम लोग आ गये हो तो अपने-अपने स्थान पर बैठ जाओ !

: ८ :

मृत्यु-दण्ड

पीतर पेत्रोविच	—	एक प्रोफेसर
मैरिया इवानोवना	—	प्रोफेसर की पत्नी
फीदया	—	प्रोफेसर का ९ वर्ष का लड़का
इवान वेसिलेविच	—	सरकारी सैनिक वकील

(मैरिया इवानोवना सी रही है। फीदिया अपने पिता की बातें सुन रहा है।)

इवान वेसिलेविच--कोई आदमी इतिहास की शिक्षाओं से इन्कार नही कर सकता। अपराध करने वाले तथा समाज के लिए खतरनाक लोगों का दलन करने अर्थात् उनको समाज से हटा देने का आदर्श इसी प्रकार पूरा होता है जैसा हमने न केवल क्रांति के बाद फ्रांस में बल्कि इतिहास के और भी युगों में देखा है और आज यहाँ रूस मे भी देख रहे हैं।

पीतर पेत्रोविच--नहीं, इसके बारे मे हम निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कह सकते। हम अंतिम परिणामों के संबंध में नहीं जान सकते। और इस स्थापना के अनुसार इन विशेष कानूनों[1] को ठीक नही कहा जा सकता।

इवान वेसिलेविच--लेकिन हमें पहले से इस बात की कल्पना

[1] उस समय रूस में सामान्य कानूनों को स्थगित करके एक प्रकार का सैनिक कानून प्रचलित था।

कर लेने का कोई अधिकार नही है कि इन विशेष कानूनों का परिणाम हानिकारक ही होगा, और यदि हानि हुई भी तो वह इन कानूनों के प्रयोग से हुई; यह भी कैसे कहा जा सकता है ? यह हुई एक बात ! दूसरी बात यह है कि जिन मनुष्यों ने मानवता के सपूर्ण लक्षणों को दिया है और खूँख्वार जानवर बन गये है, उनके साथ कठोरता का ही बर्ताव करना होगा, उदाहरणस्वरूप, जिस आदमी ने तीन सौ साल के लिए बड़ी शांति से एक बूढी औरत और उसके तीन बच्चों का खून कर दिया, उसको फॉसी देने के अलावा और क्या दड दिया जा सकता है ?

पीतर पेत्रोविख—मै मृत्यु-दड के प्रयोग की सर्वथा निदा नही करता। मै सिर्फ सैनिक-न्याय का विरोध करता हूँ, जो अक्सर मृत्यु की सजा देता है। यदि बार-बार होने वाली इन फाँसियों के डर से लोग अपराध से दूर रहते तो दूसरी बात थी, किंतु परिणाम उलटा होता है। इनके कारण लोग अपने भाइयों की हत्या के प्रति उदासीन होकर नैतिक पतन के गढ़े में गिरते हैं।

इवान वेसिलेविख—फिर वही बात। हम अंतिम परिणामों के विषय में कुछ नही जानते, लेकिन हमे इससे फायदा होता है, उसे जानते हैं.........

पीतर पेत्रोविख—फायदा ?

इवान वेसिलेविख—हाँ, हम तुरंत होने वाले फायदों से इन्कार नहीं कर सकते। भला एक ऐसे मुलजिम को उसके

कृत्यों का बदला चुकाने से समाज अपने को कैसे वंचित रख सकता है ?

पीतर पेत्रोविख—आपका मतलब यह है कि समाज को खुद बदला लेना चाहिए ?

इवान वेसिलेविख—खुद बदला नहीं। इसके विरुद्ध व्यक्तिगत बदले की जगह सार्वजनिक—सरकारी—दंड की स्थापना करके।

पीतर पेत्रोविख—हाँ। पर यह सब नियमित कानूनों द्वारा निर्णीत ढग से होना चाहिए, न कि असाधारण कानून बनाकर।

इवान वेसिलेविख—सरकारी दड ने उस इत्तफाकी, अतिशयोक्तिपूर्ण गैरकानूनी प्रतिहिसा का स्थान ले लिया है, जो प्रायः निराधार और गलत होती थी और जिसका लोग निजी और व्यक्तिगत रूप से प्रयोग करते थे।

पीतर पेत्रोविख—(गरम होकर) तब क्या आपका कहना यह है कि इस सार्वजनिक या सरकारी दंड का कभी गलत प्रयोग नही होता ? क्या वह सदा शंका से परे होता है ? क्या उसमें कभी गलती नही होती ? नही, मै इसे हर्गिज नही मान सकता ! आपके तर्क मुझे या किसी को यकीन नही दिला सकते कि ये असाधारण कानून, जिनके द्वारा हजारो को फाँसी दी जा चुकी है और अब भी दी जा रही है, न्याय-सगत, उचित या लाभदायक हैं। (उठ खड़ा होता तथा उत्तेजित अवस्था में इधर-उधर टहलने लगता है।)

फीदया--(अपनी माँ से) माँ, पिताजी इतने उत्तेजित किसलिए होगये ?

मैरिया इवानोवना--पिताजी समझते है कि इतनी अधिक फाँसियों का होना ठीक नही है ।

फीदया--क्या आदमी मारे डाले जाते है ?

मैरिया इवानोवना--हाँ, उनका विचार है कि यह इतनी ज्यादा मात्रा में नही होना चाहिए ।

फीदया--(अपने पिता के पास जाकर) पिताजी, क्या दशाज्ञाओं (टेन कमाडमेंट्स) मे यह नही कहा गया है--'किसी की हत्या न कर' ? तब तो यह बिलकुल नही होना चाहिए ।

पीतर पेत्रोविच--(मुस्कराते हुए) हम लोग जिस विषय पर बात कर रहे है उससे इसका सबध नही है । इस धर्माज्ञा का मतलब यह है कि 'एक व्यक्ति दूसरे की हत्या न करे ।'

फीदया--लेकिन जब आदमियों को फाँसी होती है तब तो वे मारे ही जाते हैं ?

पीतर पेत्रोविच--अवश्य । लेकिन तुम्हें समझना चाहिए कि कब और क्यों ऐसा किया जा सकता है ।

फीदया--कब ऐसा किया जा सकता है ?

पीतर पेत्रोविच--अब, मै तुम्हें कैसे समझाऊँ.....उदाहरण लो, जैसे लड़ाई मे होता है, या जब कोई अपराधी किसी को मार डालता है तब उसे बिना दंड दिये कैसे हो सकता है ?

फीदिया—पर धर्माज्ञा में यह क्यों कहा गया है कि हमें सबको प्यार और हर एक को क्षमा करना चाहिए ?

पीतर पेत्रोविख—अगर वैसा किया जा सके तब बहुत अच्छा हो, पर वैसा हो नहीं सकता ! (इवान वेसिलेविख की ओर मुड़कर फीदया की बातें सुनकर मुस्करा रहा है) हाँ, तो मेरे योग्य मित्र इवानवेसिलेविख, मैं इन असाधारण कानूनों और सैनिक अदालतों को नहीं मानता—नहीं मान सकता ।

: ६ :

जेल

क्षेमका —आयु १३ साल

अक्षुत्का — आयु १० साल

मित्का —आयु १० साल

पलश्का —आयु ९ साल

वानका —आयु ८ साल

(कुकुरमुत्ते इकट्ठे कर लेने के बाद बच्चे एक कुए के पास बैठे हुए हैं।)

अक्षुत्का—आह, काकी मैतर्ना की कैसी भयानक दशा थी? और बेचारे बच्चे! एक ने चीखना शुरू किया, फिर तो सब एक साथ चीखने लगे।

वानका—वे इतने घबड़ाये हुए क्यों थे?

पलश्का—क्यों? इसलिए कि उनके पिता को जेल ले जाया जा रहा था। यह उन्हें घबड़ा देने के लिए काफी था।

वानका—उनके पिता को जेल क्यों भेजा गया?

अक्षुत्का—क्या जाने? पुलिस वाले आये और उससे कहा कि जेल जाने को तैयार हो जाय। वे उसे पकड़कर साथ ले गये। हम सबने इसे देखा।

क्षेमका—वे उसे घोड़े चुराने जुर्म में पकड़कर ले गये। डमिकन का घोड़ा चोरी गया था और क्रश्नोव का भी। यह

उसी का काम था। हमारा अस्त्ता भी उसके हाथ लग गया था। क्या तुम समझती हो कि इसके लिए पुलिस वाले उसे शाबाशी दें और उसकी पीठ थपथपायें।

अक्षुत्का—हाँ, मैं जानती हूँ। फिर भी मुझे बच्चों के लिए दुःख हो रहा ह। तुम जानती हो, चार-चार बच्चे हैं—और वे लोग कितने गरीब है। उनके पास रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं है। आज तो वे हमारे यहाँ भीख माँगने आये थे।

क्षेमका—किन्तु तब उन्हें चोरी न करनी चाहिए।

मित्का—हाँ, किन्तु चोरी तो बाप करता था, बच्चे तो नही करते थे। तब उन्हें भीख माँगने पर विवश क्यों होना पड़े ?

क्षेमका—यह सीखने के लिए कि चोरी न करनी चाहिए।

मित्का—पर चोरी बच्चों ने कब की, वह तो उनके बाप ने की।

क्षेमका—अरे, तू अपना वही राग अलापे जा रही है ! 'बच्चे बच्चे !' उसने गलती क्यों की ? क्या उसे इसलिए चोरी करने को छोड़ दिया जाय कि उसके कई बच्चे हैं ?

वानका—वे लोग जेल में उसके साथ क्या करगे ?

अक्षुत्का—सिर्फ उसे वहां रखेंगे और कुछ नहीं।

वानका—क्या वे उसे खाना भी देंगे ?

क्षेमका—हाँ, हाँ, अवश्य। वह दण्डित घोड़चोर ! जेल उसके लिए क्या है ? जिन्दगी की हर एक चीज उसके लिए

वहाँ मौजूद है, और उसे वहाँ आराम से बैठे भर रहना है। अगर मै जार होता तो बताता कि घोड़-चोरों से कैसा बर्ताव करना चाहिए। मै उन्हें सिखा देता कि चोरी न करनी चाहिए। लेकिन अभी क्या है? वह वहाँ आराम के साथ, अपने ही जैसे चोरों के गिरोह मे बैठा होगा और सब एक दूसरे से और भी सफाई के साथ चोरी करना सीखते है। मेरे दादा कहते थे कि पेत्रुख बड़ा अच्छा लड़का था लेकिन एक ही बार जेल जाने के बाद वह ऐसा पक्का बदमाश होकर निकला कि उसके लिए फिर कोई आशा न रही। उस समय से जो उसने चोरी शुरू की......

वानका—तब वे लोग इन चोरों को बन्द क्यों करते है?

क्षेमका—जा, उन्ही से पूछ।

अक्षुत्का—वे उसे बन्द कर देते है, और खाना देते है...

क्षेमका—जिससे वह अपनी कला और अच्छी तरह सीख ले।

अक्षुत्का—और उधर उसके बच्चे और उनकी माँ भूखों मर जायं! वे हमारे पड़ौसी है और मुझे उनकी हालत पर रंज है। उनका क्या होगा? वे रोटी माँगते आते हैं और हम ऐसी हालत में उन्हें दिये बिना नही रह सकते।

वानका—तब वे लोगों को जेल में क्यों रखते हैं?

क्षेमका—उनके साथ और क्या किया जा सकता है?

वानका—'और क्या किया जा सकता है?' अरे, किसी तरह...जिससे......

क्षेमका--तुम कहती हो 'किसी तरह', पर किस तरह यह तुम स्वयं नहीं जानती। तुम से ज्यादा बुद्धिमान लोगों ने इसके बारे में सोचा है और कोई रास्ता नहीं पाया।

पलश्का--मैं सोचती हूँ कि भाई मैं जारित्जा होती....

अक्षुत्का--(हँसती है) हाँ, जारित्जा, तुम तब क्या करतीं।

पलश्का--मै ऐसा उपाय करती कि कोई चोरी न करता और बच्चों को रोना न पड़ता।

अक्षुत्का--हाँ, पर तुम ऐसा करोगी कैसे ?

पलश्का--मैं ऐसा इन्तज़ाम करती कि हर आदमी को वे सब चीज मिलती जो उसके लिए ज़रूरी हैं, किसी के साथ कोई ज़्यादती न होती और हर आदमी के लिए हर चीज ठीक रूप मे होती।

क्षेमका--बहुत खूब जारित्जा ! पर तुम यह सब करती कैसे ?

पलश्का--मै नहीं जानती पर मैं ऐसा ही करती।

मित्का--चलो हम लोग उधर की घनी बारी में चल। पिछले दिन वहाँ लड़कियों को काफी छत्रक--कुकुरमुत्ता--मिले थे।

क्षेमका--हाँ, यह अच्छा विचार है। आओ, चल। और तू जारित्जा ! ध्यान रखना कि कहीं तेरे कुकुरमुत्ते बिखर न जायं, तेरी अक्ल जोरों से बढ़ रही है।

(सब उठकर जाती हैं)

: १० :

सम्पत्ति

एक भूस्वामी

उसकी पत्नी

उनका ६ वर्ष का लड़का वासया

एक आवारा—बेकार

(भूस्वामी और उसकी पत्नी, अपनी लड़की, और लड़के वासया के साथ बरामदे में बैठे चाय पान कर रहे हैं। एक आवारा युवक उनके पास आता है।)

भूस्वामी—(आवारे युवक से) क्या है ?

आवारा—(सिर झुकाकर)—मालिक, आप स्वयं देख सकते हैं कि क्या है। एक बेकार आदमी पर दया कीजिए ! मैं भूखों मर रहा हूँ, और पहनने को ये चीथड़े भर रह गये हैं। मैं मास्को में था; और अब भीख माँगते हुए अपने देस जा रहा हूँ। एक गरीब दुखिया की मदद कीजिए।

भूस्वामी—तुम्हारी यह हालत क्यों है ?

आवारा—क्योंकि मेरे पास कोई रकम नहीं है।

भूस्वामी—अगर तुम काम करते तो इतने गरीब न होते।

आवारा—काम करने में मुझे खुशी होगी। लेकिन आजकल कहीं कोई काम नहीं मिल रहा है। हर जगह काम बन्द हो रहे हैं।

भूस्वामी--दूसरों को काम मिल जाता है। तब तुम्हें क्यों नहीं मिलता।

आवारा--मालिक! मै ईमानदारी से कहता हूँ कि कही काम मिले तो मैं कृतज्ञ होऊँगा। लेकिन मुझे कोई काम मिल नही रहा है। मालिक! मुझ पर दया करो। आज दो दिन से मैंने कुछ नही खाया है।

भूस्वामी--(अपना पर्स या थैली खोल कर देखता है। फिर अपनी पत्नी से) क्या तुम्हारे पास खुदरे पैसे है? मेरे पास सिर्फ नोट हैं।

पत्नी--(वासया से) बेटा! मेरे पलँग के पास जो छोटा टेबुल है उस पर बैग है। जाओ, उसमे एक पर्स होगा। उसे उठा तो लाओ।

(वासया माँ की बात नही सुन पाता, वह टकटकी लगाये आवारा की ओर देखता रहता है।)

पत्नी--वासया, तुम सुन नहीं रहे हो? (आस्तीन पकड़ कर खीचती है) वासया!

वासया--क्या है, माँ? (उसकी माँ अपनी बात दोहराती है। वासया उछल पड़ता है) बहुत अच्छा, माँ! (आवारा की ओर नज़र गड़ाये हुए जाता है।)

भूस्वामी--(आवारा से) वहाँ थोड़ी देर--एक मिनट के लिए ठहरो। (आवारा एक तरफ हो जाता है। भूस्वामी अपनी पत्नी से फरांसीसी भाषा में कहता है जिससे आवारा न समझ सके) कैसी भयानक बात ह कि इतने ज़्यादा आदमी आजकल

बिना काम के इधर-उधर फिर रहे हैं । यह सब आलसीपन का प्रभाव है—फिर भी अगर वह भूखा है तो बड़ी भयानक बात है ।

पत्नी—ये लोग बढ़ा-चढ़ा कर बात करते हैं । म सुनती हूँ कि यही हालत विदेशों मे भी है । न्यूयार्क म एक लाख बेकार हैं ! तुम और चाय लोगे ?

भूस्वामी—हाँ, थोड़ी-सी दो पर इस बार ज़रा हल्की हो ।

(सिगरेट पीता है । सब लोग चुप है)

(आवारा उनकी ओर देखता है, अपना सिर हिलाता और खाँसता है—शायद इस तरह उनका ध्यान अपनी ओर खींचना चाहता हो । वासया पर्स के साथ दौड़ा आता है और तुरन्त आवारा की ओर देखता है । वह पर्स माँ को दे देता है और आवारा की ओर टकटका लगाकर देखता है ।)

भूस्वामी—(पर्स से तीन आने कीमत का एक रूसी सिक्का निकालते हुए) अरे, तुम्हारा नाम क्या है;—लो !

(आवारा अपनी टोपी उतार कर सलाम करता है और सिक्का ले लेता है)

आवारा—एक गरीब दुखिया की मदद करने के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ ।

भूस्वामी—मेरे लिए तो असली दुःख यह है कि तुम्हें काम नहीं मिल रहा है । यदि तुम काम करते तो कभी भूखे न रहते । जो काम करता है उसे कमी नहीं होती ।

आवारा—(अपनी टोपी सिर पर रखता है और घूमकर रास्ता पकड़ते हुए कहता है) लोगों का कहना सच है—

'श्रम से झुकती पीठ है,
पर ना भरता पेट।'

(जाता है)

वासया—उसने अभी-अभी क्या कहा ?

भूस्वामी—एक मूर्खतापूर्ण किसानी उक्ति—

'श्रम से झुकती पीठ है,
पर ना भरता पेट।'

वासया—इसका क्या मतलब ?

भूस्वामी—इसका मतलब यह कि काम करते-करते कमर झुक जाती है पर आदमी धनवान नही होता।

वासया—तो क्या यह गलत है ?

भूस्वामी—अवश्य गलत है। जो उस आदमी की तरह इधर-उधर फिरते है और काम करना नही चाहते, हमेशा गरीब रहते है। जो श्रम करते हैं वही धन कमाते हैं।

वासया—पर क्या बात है कि हम लोग धनी हैं। हम लोग तो काम नही करते !

पत्नी—(हॅसती हुई)—तुम कैसे जानते हो कि तुम्हारे पिता जी काम नहीं करते ?

वासया—मैं नही जानता। पर इतना जानता हूँ कि हम लोग बड़े धनी हैं, इसलिए पिताजी को खूब काम करना चाहिए। क्या वह कड़ी मेहनत करते हैं ?

भूस्वामी—सब काम एक-से नही होते। शायद मेरा काम हर कोई न कर सकेगा।

वासया--आपका काम क्या है ?

भूस्वामी--तुम्हें खिलाने, पहनाने और शिक्षा देने का प्रबन्ध करना।

वासया--पर ये बातें तो उसे भी अपने बच्चों के लिए करनी होंगी, तब उसे इतना कष्ट क्यों भोगना पड़ रहा है, जब हम सब....

भूस्वामी--(हँसते हुए)--यह वास्तविक समाजवादी है।

पत्नी--हाँ, अवश्य। एक मूर्ख उससे ज्यादा सवाल पूछ सकता है जितना हज़ार विद्वान् जवाब दे सकते है। यहाँ 'मूर्ख' की जगह 'दयावान' शब्द रख देना चाहिए क्योंकि हर बच्चा वैसा होता है।

: ११ :

अपनी हानि करने वालों को प्यार करना

माशा —आयु १० साल

वानया—आयु ८ साल

माशा—मैं सोच रहा था कि कैसा अच्छा होता, यदि इस समय माँ लौट आती और अपने साथ हमे गाडी पर बाहर घुमाने ले चलती। उधर से ही हम लोग नास्त्या को भी देख आते। आखिर तुम क्या चाहती हो ?

वानया—मैं ? मैं वही चाहती हूँ जो कल हुआ था।

माशा—क्यों कल क्या हुआ था ? ग्रीशा ने तुमको मारा था, और फिर तुम दोनो रोई थी। इसमे अच्छी बात क्या थी ?

वानया—हा, बात तो यही है पर इसमे जो अच्छाई थी उससे अच्छा कुछ नही हो सकता ! इसीलिए मैं चाहती हूँ कि आज फिर वही बात घटे।

माशा—पता नही, तुम क्या कर रही हो।

वानया—मैं अपना मतलब समझाने की कोशिश करूँगी। तुम्हें याद है कि पिछले रविवार को काका पावेल इवानोविल ने किस तरह....ए ! क्या वे अच्छे नही हैं ?

माशा—हाँ, हर आदमी उन्हे प्यार करता है। माँ कहती है कि वे सन्त पुरुष हैं। और यह बात बिलकुल सही है।

वानया—हाँ, हाँ।....तुम्हें याद होगा कि पिछले रविवार को उन्होंने एक कहानी सुनाई थी—एक आदमी की, जिसके साथ हर आदमी खराब बर्त्ताव करता था पर वे लोग उसके साथ जितना ही खराब व्यवहार करते थे, उतना ही वह उन्हें प्यार करता था। वे उसकी निन्दा करते थे—गालियाँ देते थे लेकिन वह उनकी प्रशंसा करता था। वे उसे मारते थे पर वह उनको मदद करता था। काका कहते थे कि यदि लोग उस आदमी की तरह रहें तो वे बहुत सुखी होंगे। मुझे वह कहानी बड़ी अच्छी लगी और उस आदमी की तरह बनने की इच्छा हुई। इसीलिए जब कल ग्रीशा ने मुझे मारा तो मैंने उसे चूम लिया। वह रोने लगा। मुझे बड़ी खुशी हुई। लेकिन दाई के साथ मैं उतना अच्छा व्यवहार न कर सकी। उसने मेरी निन्दा शुरू की और मैं भूल गई कि मुझे कैसा व्यवहार करना चाहिए। मैंने उसके साथ उद्दण्डता का व्यवहार किया। मै हृदय से चाहती हूं कि फिर कोशिश करूँ और उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करूँ जैसा मैंने ग्रीशा के साथ किया था।

माशा—क्या तुम चाहती हो कि कोई तुम्हें मारे ?

वानया—हाँ ! तब मैं वही करूँगी जो मैंने ग्रीशा के साथ किया था और मुझे बहुत आनन्द होगा।

माशा—कैसी मूर्खता की बात है ! तू सदा मूर्ख थी, और अब भी है !

वानया—कोई परवाह नहीं। मैं अब जान गई हूँ कि सदा

प्रसन्न रहने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

माशा--नादान बच्ची ! पर क्या ऐसा करने से सचमुच तुझे खुशी होती है ?

वानया--बहुत ज्यादा।

: १२ :

अखबार

बोलोदय —हाई स्कूल का विद्यार्थी, १४ वर्ष

सोनया —आयु १५ साल

मीशा —आयु ८ साल

एक कुली

(बोलोदय पढ़ रहा है और 'होमवर्क' (स्कूल से घर पर करने को दिया काम) कर रहा है। सोनया लिख रही है। कुली अपनी पीठ पर एक बड़ा बोझ लिये आता है उसके पीछे मीशा है।)

कुली—भैया, यह बोझ कहाँ रखूँ? मेरी बाहें उखड़ी जा रही है।

बोलोदय—तुमसे कहाँ रखने को कहा गया है?

कुली—वासिली तिमोफीविच ने कहा है कि इसे अभी पढाई के कमरे मे रख दिया जाय, फिर मालिक के आने पर वह जहाँ कहेंगे, रखा जायगा।

बोलोदय—तब, उस कोने में रख दो। (फिर पढ़ने लगता है। कुली बोझा रख देता है और हाँफ रहा है।)

सोनया—वह क्या लाया है?

बोलोदय—'सत्य' नाम का अखबार है।

सोनया—इतने ज्यादा क्यों है?

वोलोदय—यह सारे साल भर की फाइल है। (पढ़ने लगता है।)

मीशा—लोगों न इतना सब लिखा है।

कुली सचमुच। जिन्होंने लिखा होगा उन्होंने बड़ी मेहनत की होगी।

वोलोदय—तुमने क्या कहा ?

कुली—मैंने कहा कि जिन्होंने यह सब लिखा होगा वे काम से भागनेवाले न होंगे। अच्छा, अब मैं चलूं। कृपा करके कह देना कि मैं यह अखबार रख गया हूं। (जाता है)

सोनया—(वोलोदय से) पिताजी को इन सब पत्रों की क्या जरूरत है ?

वोलोदय—वह बोल्शकोव के लेखों की कतरनें लेना चाहते हैं।

सोनया—लेकिन काका मिलेख इवानोविख कहते हैं कि वोल्शकोव के लेख उन्हें क्षुब्ध कर देते हैं !

वोलोदय—हाँ, काका इवानोविख की यही राय है। वह 'सर्वोदय' पढते हैं।

मीशा—क्या काका का 'सर्वोदय' भी इतना ही भारी भरकम है ?

सोनया—इससे भी भारी ! लेकिन यह सिर्फ एक साल की फाइल है और यह अखबार बीस साल या उससे भी ज्यादा समय से निकल रहा है।

मीशा—क्या ? ऐसे-ऐसे बीस बोझे ! दूसरे बीस बोझे ?

सोनया––(मीशा को आश्चर्य-चकित करने के लिए) अरे, इतना ही बस नही है। ये तो सिर्फ दो अखबार हैं। और तीस से भी ज़्यादा अखबार छपते हैं।

बोलोदय––(अपना सिर उठाये बिना) तीस ! सिर्फ रूस म पाँच सौ तीस निकलते हैं, अगर तुम विदेशों में छपनेवालों को गिनो तो उनकी संख्या हज़ारों तक पहुंचेगी।

मीशा—उनको इस कमरे मे तो नहीं रखा जा सकता ?

बोलोदय—इस कमरे में ! उनसे हमारी सारी सड़क भर जायगी। लेकिन उसकी चिन्ता न करो कल मुझे परीक्षा देनी है और तुम्हारी वाहियात बातों से मेरी पढ़ाई में बाधा पड़ रही है। (फिर पढ़ने लगता है।)

मीशा—मेरे विचार से उनको इतना ज़्यादा न लिखना चाहिए।

सोनया—क्यों ?

मीशा—क्योंकि यदि बाते सच्ची हैं तो उन्हें एक ही बात बार-बार दोहरानी न चाहिए, और अगर सच नहीं हैं तब तो एकदम लिखना ही न चाहिए।

सोनया—ओह, तुम ऐसा सोचती हो !

मीशा—पर वे, इतना ज़्यादा पोथे के पोथे लिखते क्यों हैं ?

बोलोदय—(अपनी पुस्तक पर से सिर उठाकर) क्योंकि पत्रों की स्वतन्त्रता के बिना हमें सत्य का पता ही न चलेगा।

मीशा—लेकिन पिताजी कहते हैं कि सच्चाई इस 'सत्य'

अख़बार म है और काका माइखेल कहते है कि 'सत्य' पढ़कर उनकी तबीयत भन्ना जाती है। वे कैसे पता लगाते है कि सच्चाई 'सत्य' में है या 'सर्वोदय' मं ?

सोनया—बिलकुल ठीक ! दुनिया मे बहुत से अखबार, मासिक पत्र और किताबें हैं।

बालोदय—बिलकुल औरत-सी बाते है——सदा हलकेपन की बातें !

सोनया—नही ! मै कहती हूं कि उनकी तादाद इतनी ज़्यादा है कि हम नही कह सकते......

बोलोदय—हर आदमी को विवेक या बुद्धि दी गई है कि वह सत्य कहाँ है, इसका निर्णय करे।

मीशा—अच्छा, अगर सबमे विवेक-बुद्धि है तो हर आदमी अपन लिए खुद निर्णय कर सकता है।

बोलोदय—अच्छा ! आपके महा दिमाग ने इस विषय पर फैसला दे दिया ! लेकिन अब दया करके यहाँ से कही चले जाइए और मेरी पढ़ाई मे बाधा न दीजिए।

: १३ :

पश्चात्ताप

बोलया -- उम्र ८ साल

फीदिया --उम्र १० साल

(बोलया एक खाली तश्तरी लिये रास्ते में खड़ी है और रो रही है। फीदिया दौड़ता है और बोलया को देखकर एकदम रुक जाता है।)

फीदिया--माँ ने मुझसे कहा है कि मै देखूँ, तू कहाँ है। तू रो क्यों रही है? क्या तू खाना दाई के पास ले गई थी? (खाली तश्तरी देखता और मुँह से सीटी बजाता है) खाना कहाँ है?

बोलया--मै.. .मै . मै ले जाना चाहती थी पर.......पर एकाएक . ..ओह, ओह, ओह ..;..मै खाना चाहती न थी पर खा गई......।

फीदिया--अरे, तू उसे दाई के पास नही ले गई और खुद खा गई? क्या मज़े की बात तूने की! और माँ ने सोचा था कि तू उसे दाई के पास ले जाना पसन्द करेगी।

बोलया--हाँ, मै ले जाना चाहती थी......पर एकाएक ... मै वैसा करना नही चाहती थी......हाय!.... ओह।

फीदिया--तुमन सिर्फ चखा और फिर सब खा गई! क्या

मज़ा रहा ! (हँसता है ।)

बोलया--हाँ, तुम्हारा हँसना ठीक ही है। लेकिन मै अब उनसे कैसे कह सकती हूँ .. मै दाई से नही कह सकती और मै माँ से नही कह सकती ।

फीदिया--अच्छा, तुमने ऐसा किया ! हा-हा-हा-तो तुम सब खा गई ! अब रोने से क्या फायदा होगा ? तुम्हें सोचना होगा कि अब क्या किया जाय !

बोलया--मै क्या सोचूँ ? मै क्या करूँ ?,

फीदिया--बड़ी कठिन समस्या है ! (हँसी रोकने की कोशिश करता है । चुप्पी ।)

बोलया--अब मै क्या करूँ ? बहुत बुरा हुआ ! (सिसकती है ।)

फीदिया--तुम किस बात के लिए इतनी घबड़ा रही हो ? रोना बन्द कर, बन्द कर ! बस सीधे जाकर माँ से कह दे कि तूने उसे खा लिया ।

बोलया--यह तो और बुरा होगा !

फीदिया--तब जा और दाई से अपना सब दोष स्वीकार कर ले ।

बोलया--मै वैसा कैसे करूँगी ?

फीदिया तब सुनो ! तुम यही रुको, और मै दौड़कर दाई के पास जाता हूँ और कह देता हूँ । वह कोई ख्याल न करगी ।

बोलया--नही, उनसे कुछ मत कहो । मै उनसे कैसे कह सकती हूँ ?

फीदिया—हुश ! मर्ख ! तुमने गलती की ह—पर अब क्या किया जाना चाहिए ? मैं जाता हूँ और उनसे कहता हूँ। (दौड़कर चला जाता है।)

बोलया—फीदिया ! फीदिया ! ठहरो......अरे, वह चला गया।......मै सिर्फ उसे चखना चाहती थी, पर उसके बाद—मुझे याद नही आता कि कैसे—मैं सब-का-सब खा गई ! मै अब क्या करूँ ? (सिसकती है)

(फीदिया दौड़ता आता है।)

फीदिया—बस बहुत रो ली ! मैं पहले ही कहता था कि दाई तुम्हें क्षमा कर देंगी। उन्होंने इतना ही कहा : अरी मेरी प्यारी बच्ची !'

बोलया—पर क्या उन्होंने गुस्सा नही किया ?

फीदिया—उन्होंने गुस्सा होने की कोई बात ही नही सोची। वह बोली—'उसे खाने के साथ ईश्वर की कृपा भी प्राप्त हो। मै तो खुद उसे वह खाना दे देती।'

बोलया—लेकिन, तुम समझ रहे हो, मेरी उसे खाने की इच्छा नही थी ! (फिर रोने लगती है।)

फीदिया—अब क्या हुआ ? हम यह बात माँ से न कहेंगे और दाई ने तुम्हें क्षमा कर ही दिया !

बोलया—हाँ, दाई ने मुझे क्षमा कर दिया। वह दयालु और अच्छी हैं। पर मैं बुरी हूँ, बुरी ! यही सोचकर मुझ रोना आता है।

कला

नोकर —मेज पर परोसने का काम करने वाला

आया —

पावेल —खानसामा का सहायक

नताशा —आयु ८ साल

नीना —हाई स्कूल मे पढनेवाली लडकी

सेनेश्का—हाई स्कूल म पढ़ने वाला लड़का

नौकर—(एक तश्तरी या ट्रे लिए आता है) बादामी दूध और चाय, और कुछ रम ![1]

आया—(मौजा बुनती और सिलाई के अंक गिनती हुई) ..... बाईस, तेईस......

नौकर—सुनती हो, अरे सुनती हो ?

आया—हाँ, मै सुन रही हूँ, मै सुन रही हूँ ! पर मै अधूरा काम छोड़कर नहीं उठ सकती। (नताशा से) मै अभी तुम्हें आलूचा देती हूँ। पहले मैं दूध तैयार कर लूँ। (दूध छानती है।)

नौकर—(बैठते हुए)—मैंने खूब देखा ! ये क्यों अपना धन यों खर्च करते हैं ?

आया—तुम किस विषय मे बात कर रहे हो ? क्या

१ गुड का विलायती शराब।

ये लोग थियेटर गये थे ? जान पड़ता है, आज का खेल लम्बा था ।

नौकर—सगीत-नाटक सदा लम्बे होते है । बस बैठो और बैठे रहो उन्होंने कृपा करके मुझे भी देखने दिया । मुझे तो देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ ! (पावेल कुछ आलूचे लिये आता है, और बात सुनने को खड़ा हो जाता है ।)

आया—हाँ, तो वहाँ खूब गाना हुआ होगा ?

नौकर—हाँ, पर कैसा गाना ! सिर्फ गलेबाजी और चिल्लाहट—कोई ऐसी चीज़ नही जिसमे असलियत हो । और फिर वे झगड़ते है और लड़ाई होती है, और फिर गाने लगते है ।

आया—पर लोग कहते है कि सगीत-नाट्यालय का सीजन-टिकट बहुत महगा होता है ।

नौकर—हम लोग अपने 'बाक्स' (स्थानों) के लिए, बारह दिनों का तीन सौ रूबल[1] देते हैं ।

पावेल—(अपना सिर हिलाते हुए) तीन सौ ! यह रकम कौन पाता है ?

नौकर—जो गाते है उनको बहुत काफी मिलता है । लोग कहते हैं कि प्रधान गायिका या अभिनेत्री[2] पचास हजार सालाना तक कमा लेती है ।

पावेल—हजारों की बात जाने दो—तीन सौ ही, एक

---

१ रूबल, रूसी सिक्का (लगभग १ रुपया साढे नौ आने मूल्य) ।
२ बड़े-बड़े गायक, वादक ।

किसान के लिए, बहुत बड़ी रकम है। हममें से बहुतेरे सारी ज़िन्दगी मरते हैं, फिर भी तीन सौ क्या, एक सौ भी नहीं बचा पाते !

(नीना भंडारे में आती है)

नीना—क्या नताशा यहाँ है ? तुम कहाँ थे ! माँ तुम्हें पूछ रही थी।

नताशा—(आलूचा खाते हुए) मैं, एक मिनट में आता हूँ।

नीना—(पावेल से) तुम सौ रूबलों की क्या बात कह रहे थे ?

आया—सेमेन निकोलविच (नौकर की तरफ उंगली से इशारा करके) हम लोगों को आज के, नाटक-गृह के गानों के विषय में बता रहा था और कह रहा था कि गायकों को कैसी ऊँची तनख्वाह मिलती है। पावेल को सुनकर ताज्जुब हुआ। नीना क्या यह सच है कि अच्छे गायक को पच्चीस हजार तक मिल जाते है ?

नीना—इससे भी ज्यादा ! एक गायक को तो अमेरिका जाने के लिए एक लाख पचास हजार का 'आफर' मिला था। इतना ही बस नही। कल के अखबारों में छपा था कि एक गायक को अपनी उँगली के नाखून के लिए पच्चीस हजार मिला।

पावेल—वे कुछ भी छाप सकते हैं ! क्या ऐसी बात सम्भव है ?

नीना—(भरोसे के साथ) मैं कहती हूँ, यह सच है।

पावेल—पर उन्होंने इतना एक नाखून के लिए क्यों दिया ?

नताशा—हाँ, क्यों दिया, बताओ ।

नीना—क्योंकि वह एक पियानो बजाने वाला था और उसका बीमा हो चुका था कि अगर उसके हाथों को कुछ भी हुआ जिसके कारण वह बजा न सके तो उसे उतनी रकम मिल जायगी ।

पावेल—वाह रे सौदा !

(सेनेश्का आता है)

सेनेश्का—अरे यहाँ कैसी सभा जुडी है । यह सब क्या हो रहा है ?

(नीना सब बताती है ।)

सेनेश्का—(और भी अधिक सन्तोष के साथ) मैं इससे भी बड़ी बात जानता हूँ ! पेरिस की एक नर्त्तकी ने अपने पाँवों का दो लाख का बीमा कराया है । यदि उसके पाँवों में चोट लग जाय और वह काम न कर सके तो उसे इतना मिलेगा ।

नौकर—पर क्षमा करना, ये लोग है जो नग्न कार्य करते हैं ।

पावेल—तब तो तुम्हारे लिए अच्छा काम है ! उन्हें इसके लिए रुपया मिलता है, यह कैसी कल्पना है !

सेनेश्का—पर याद रखो, हर एक आदमी इस तरह का काम नही कर सकता और सोचो इसे सीखने में उन्हें कितने

मालूम लग जाते हैं।

पावेल--क्या सीखने में ? कोई अच्छी बात या परों को जोर से घुमाने में ?

सेनेश्का--ओह ! तुम नहीं समझते। कला बहुत बड़ी चीज़ है।

पावेल--मैं समझता हूँ यह सब वाहियात है। और यह सब मोटे आसामियों की बात है जिनके पास फेंकने के लिए फालतू धन है। अगर उन्हें उसी तरह मेहनत से पैसा कमाना पड़ता जिस तरह हम कमाते हैं, जिसमें कमर झुक जाती है, तो इन नर्तकों और गायकों में से कोई पैदा न होता। ये सब मिलाकर एक कौडी मोल के नहीं हैं।

सेनेश्का आह ! अपढ़ रहना भी कैसी बात है। इसके लिए बीथोवेन, वियार्डो, और राफैल सब वाहियात हैं !

नताशा--और मेरी समझ से तो जो वह कहता है, ठीक है।

नीना--चलो, हम चलें। आओ।

: १५ :

विज्ञान

एक स्कूली लड़का—आयु १५ साल, स्कूल के आधुनिक विभाग मे पढने वाला।

एक स्कूली लड़का—आयु १६ साल, स्कूल के प्रचीन विभाग मे पढने वाला।

वोलोदय
पेत्रूशा } आठ वर्ष की आयु के जुड़वाँ बच्चे।

आधुनिकतावादी—मेरे लिए लैटिन और ग्रीक की क्या उपयोगिता है ? जो भी अच्छी या महत्त्वपूर्ण बाते है उन सबका अनुवाद आधुनिक भाषाओं मे होगया है।

प्राचीनतावादी—जबतक तुम ग्रीक में न पढ़ो 'इलियड' को कभी समझ न सकोगे।

आधुनिकतावादी—लेकिन मुझे पढ़ने की जरूरत क्या है, और मै तो चाहता भी नही।

वोलोदय—'इलियड' क्या है ?

आधुनिकतावादी—एक कथा।

प्राचीनतावादी—हां उस तरह की दूसरी कथा दुनिया म दूसरी नही है।

पेत्रूशा—इतनी अच्छी बात उसमे क्या है ?

आधुनिकतावादी—कुछ भी नही। यह भी बिलकुल दूसरी कहानियों की तरह है।

प्राचीनतावादी—जब तक तुम इन कहानियों को न जानो तब तक भूतकाल को ठीक-ठीक समझ नही सकते ।

आधुनिकतावादी—मेरे मत से यह भी वैसा ही मूढ विश्वास है, जैसा परमार्थ विद्या है ।

प्राचीनतावादी—(गरम होकर) परमार्थ विद्या झूठी और वाहियात ह पर यह तो इतिहास और ज्ञान है ।

बोलोदय—क्या परमार्थ विद्या सचमुच वाहियात है ?

प्राचीनतावादी—तुम इस बहस मे क्यों बोलते हो ? तुम इस विषय मे कुछ समझ नही सकते ।

बोलोदय और पेत्रूशा—(दोनो अपमान अनुभव करके एक साथ बोलते है) हम क्यों नहीं समझते ?

बोलोदय—शायद हम तुमसे भी ज्यादा अच्छी तरह समझते है ।

प्राचीनतावादी—ओह ? अच्छा, अच्छा । लेकिन चुप बैठो और हमारी बातचीत मे बाधा मत डालो (आधुनिकतावादी से) तुम कहते हो कि प्राचीन भाषाओं का आजकल के जीवन के लिए कोई उपयोग नही है । लेकिन यही बातें कीटाणु-शास्त्र और रसायन, पदार्थ-विज्ञान और रमायन-शास्त्र के विषय में भी कही जा सकती है । तारों की दूरी और उनका साइज तथा वे सब तफसील की बात जानकर किसी का क्या भला होगा ?

आधुनिकतावादी—ऐसा क्यों कहते हो कि इस ज्ञान से कोई लाभ नही । यह तो बड़ा उपयोगी है ।

प्राचीनतावादी—किसलिए ?

आधुनिकतावादी—किसलिए ? सब तरह की बातों के लिए—जैसे जहाजरानी।

प्राचीनतावादी—इसके लिए ज्योतिष की आवश्यकता नही।

आधुनिकतावादी—अच्छा, खेती, औषधि और उद्योग-धधों में विज्ञान का जो व्यावहारिक उपयोग हो रहा है, उसके लिए क्या कहोगे ?

प्राचीनतावादी—पर वही ज्ञान बम बनाने और युद्ध में भी काम आता है। और उसी का उपयोग क्रान्तिकारी भी करते हैं। अगर इसने लोगों को अच्छी ज़िन्दगी बिताना सिखाया होता.......

आधुनिकतावादी—पर क्या लोग तुम्हारे ढंग के विज्ञान के द्वारा अच्छे बन जाते हैं ?

बोलोदय—कौन-सा विज्ञान लोगों को भला बनाता है ?

प्राचीनतावादी—मैंने तुमसे कहा था कि अपने से बड़ों की बातचीत में बाधा मत देना। तुम बेहूदी बातें करते हो।

वोलोदय और पेत्रूशा—(एक साथ) बेहूदी सही, पर कौन से विज्ञान आदमियों को ज्यादा अच्छा जीवन बिताना सिखाते है ?

आधुनिकतावादी—ऐसे कोई विज्ञान नही है। हरएक को खुद इसका विचार करना पड़ता है।

प्राचीनतावादी—तुम उन बच्चों से क्यों उलझते हो ? वे तो कुछ समझते नहीं।

आधुनिकतावादी—क्यों नहीं ? (बोलोदय और पेत्रूशा से) हाई स्कूल में यह नहीं सिखाया जाता कि जीवन कैसे बिताना चाहिए ।

बोलोदय—अगर वहाँ यह नहीं सिखाया जाता तो फिर पढ़ने की ज़रूरत ही नहीं है ।

पेत्रूशा—जब हम बड़े होंगे तो अनावश्यक बातें नहीं सीखेंगे ।

बोलोदय—लेकिन हम लोग खुद अच्छा जीवन बितायेंगे ।

प्राचीनतावादी—(हँसते हुए) देखो, इन ऋषियों ने कैसा सार निकाला ?

: १६ :

मुकदमेबाजी

एक किसान

उसकी पत्नी

उसके लड़के का धर्मपिता

फीदोर } उनके लडके
पेतका

किसान—(झोपड़ी मे प्रवेश करके अपनी चीजे उतारते हुए) हे ईश्वर, कैसा मौसम है ! मै बड़ी मुश्किल से वहाँ तक पहुँच सका।

पत्नी—हाँ, दूर भी बहुत है। दस मील[१] तो जरूर होंगे।

किसान—अरे, पूरे चौदह मील है। (फीदोर से) जाओ घोड़े को बाँध दो।

पत्नी—क्या उन्होंने हमारे हक में डिग्री की ?

किसान—डिग्री नही, खाक ! सब गड़बड़ है।

धर्मपिता—भाई, क्या बात है ? मेरी समझ मे तुम्हारी बात नही आरही है।

किसान—बात यह है कि अवरयान ने मेरे रसोई घर से लगे बगीचे पर जबर्दस्ती कब्जा कर लिया है; कहता है, यह

---

१ मूल मे १५ वर्स्ट है। एक वर्स्ट ३५०० फुट लम्बा होता है। लगभग दस मील हुआ।—अनुवादक।

मेरा है, । इस मामले का निबटारा नही हो पा रहा है ।

पत्नी—हम लोग दो बरस से मुकदमा लड़ रहे है ।

धर्मपिता– हाँ हाँ, मुझे मालूम है । पिछले साल यह स्थानीय अदालत में चल रहा था । पर मैने तो सुना था कि फैसला तुम्हारे पक्ष मे हुआ ।

किसान—हाँ, पर अबरयान भूमि के अफसर के पास गया और उसने मुकदमा फिर से सुने जाने के लिए भेज दिया । इसके बाद मामला खत्म हो जाना चाहिए था पर अब उन्होने फिर से विचार किया है और बगीचा उसे दे दिया है । कैसे भले जज है ये !

पत्नी —अच्छा, अब क्या होगा ?

किसान– जो जगह मेरी है, उसे मै कभी उसके हाथ न जाने दूँगा । मै और बड़ी अदालत में मामला ले जाऊँगा । मैंने एक वकील से बातचीत भी कर ली है ।

धर्मपिता– पर मान लो वह अदालत भी उसी के पक्ष में फैसला करती है तब ?

किसान—तब मै इसे और ऊँची अदालत मे ले जाऊँगा । मै उस तौद वाले थल-थल शैतान को यों न छोड़ दूँगा । उसको भी पता चल जायगा कि वह किससे लड़ रहा है ।

धर्मपिता—य जज भी एक बला है, अभिशाप है ! सच्चे अभिशाप पर यदि वे भी उसके पक्ष मे निर्णय दें तब क्या होगा ?

किसान— मैं इसे जार तक ले जाऊँगा. .....ओह, घोड़ा खड़ा है। जाऊँ उसे घास तो दूं। (बाहर जाता है।)

पेतका—और अगर जार भी हमारे विरुद्ध फैसला करे तो फिर हमें किसके पास जाना होगा?

किसान-पत्नी—जार के बाद कोई नहीं है।

पेतका—इन जजों में से कुछ ने अवरयान और कुछ ने पिताजी के पक्ष में फैसला क्यों दिया?

किसान-पत्नी—इसलिए कि वे खुद अपने को समझ न पाये।

पेतका—जब वे जानते-समझते नहीं तब हम उनसे क्यों पूछते हैं?

किसान-पत्नी—इसलिए कि कोई अपनी चीज पर से अपना अधिकार आसानी से नहीं छोड़ता।

पेतका—मैं समझ गई कि बड़ी होने पर ऐसे मामले में मैं क्या करूँगा। अगर हमारा किसी से मतभेद होगा तो हम चिट्ठी डालकर निर्णय कर लेंगे कि किसे वह मिले। चाहे जिसे मिले, मामला वहीं समाप्त हो जायगा। मैं अकुल्का के साथ सदा यही करता हूँ।

धर्मपिता—और सचमुच, यही सबसे अच्छा उपाय है। बिना पाप के निर्णय हो जाता है।

किसान-पत्नी—हाँ, है तो ठीक। उस जमीन के टुकड़े के लिए हम लोगों ने न जाने कितना खर्च किया होगा—उसकी कीमत से भी ज्यादा। सचमुच, यह पाप है।

: १७ :

अपराध और दण्ड

ग्रिश्का—आयु १२ साल

सेम्का—आयु १० साल

तिश्का—आयु १३ साल

तिश्का—वे लोग उसे जेल मे रखेगे जिससे फिर वह चोरी करने किसी के खलिहान मे न पैठे। अब वह ऐसा करने म हिचकेगा।

सेम्का—अगर उसने सचमुच यह काम किया हो तब तो ठीक है, पर मिकता दादा कह रहे थे कि मित्रोफान को गलत जेल भेजा गया है।

तिश्का—गलत ? तुम्हारा क्या मतलब है ? यदि उसे निरपराध सजा दी गई होगी तो क्या सजा देनेवाला दण्ड न पायेगा ?

ग्रिश्का—हॉ, अगर उसने गलत सजा दी होगी तो उसे शाबाशी नही मिलेगी। तब उसे भी सजा मिलेगी।

सेम्का—पर उसे सजा देगा कौन ?

तिश्का—जो उससे भी ऊपर है।

सेम्का—और उससे ऊपर कौन है ?

तिश्का—ऊँचे अधिकारी या अफसर।

सेम्का—लेकिन मान लो अधिकारियो ने भी गलती की तब ?

ग्रिश्का—तब उनसे भी ऊँचे अफसर हैं जो उनको दण्ड देंगे। इसीलिए तो जार है।

सेम्का—और अगर जार गलती करें तो उन्हें कौन दण्ड देगा?

तिश्का—'कौन दण्ड देगा? कौन दण्ड देगा?' हम जानते है.........

ग्रिश्का—ईश्वर उन्हें दण्ड देगा।

सेम्का—तब फिर ईश्वर ही उस आदमी को दण्ड देगा जो खलिहान में चोरी करने घुसा था। इसलिए केवल ईश्वर पर अपराधी को दण्ड देने का कार्य छोड़ देना चाहिए। ईश्वर कोई गलती न करेगा।

तिश्का—पर ऐसा कैसे हो सकता है?

सेम्का—क्यों नही?

तिश्का—क्योंकि.......

: १८ :

निजी सम्पत्ति

एक बूढ़ा बढ़ई

सात बरस का एक लड़का

(बूढ़ा बढ़ई पेश दरीचे–बालकनी–की घरनों की मरम्मत कर रहा है मकान-मालिक का छोटा लड़का उसे देख रहा है और उसके काम के प्रति प्रशसा से भर रहा है।)

लड़का—अहा, तुम कैसी अच्छी तरह यह काम कर रहे हो ! तुम्हारा नाम क्या है ?

बढ़ई—भैया, पहले लोग मुझे खोलका कहते थे, पर अब ख़ोल कहते हैं। मेरा दूसरा नाम सैविख है।

लड़का—ख़ोल सैविख ! तुम बहुत अच्छा काम करते हो।

बढ़ई—जितने भी काम करने योग्य है, उन्हें अच्छी तरह ही करना चाहिए। भद्दे काम मे क्या आनन्द है ?

लड़का—क्या तुम्हारे मकान में भी ऐसा बरामदा (बालकनी) है ?

बढ़ई—(हँसते हुए)—बरामदा ! अरे मेरे भैया, तुम्हारे मकान–जैसा बरामदा कहाँ मिलता है ? हमारा तो ऐसा है जिसमें न खिड़की है, न दरवाजा, न छत, न दीवारें, न फर्श ? कुछ ऐसा ही हमारा बरामदा है।

लड़का––तुम हमेशा मजाक करते हो !, नही, सच बोलो, क्या तुम्हारे यहाँ भी ऐसा बरामदा है ? मै जानना चाहता हूँ ।

बढ़ई—बरामदा ? प्यारे भैया, मेरे जैसे आदमियों को बालकनी या बरामदा कहाँ नसीब ? यहाँ बहुत बड़ी दया होगी यदि हमारे सिरों पर एक छत हो । मै वसन्त ऋतु से बराबर अपनी झोंपड़ी बनाने की कोशिश कर रहा हू । मैंने पुरानी गिरा दी, पर नई पूरी नही हो पा रही है । अभी भी उस पर छत नही पड़ी है और वह गिरती जाती है ।

लड़का––(आश्चर्य-चकित)––ऐसा क्यों ?

बढ़ई––सिर्फ इसलिए कि मै काफी शक्तिमान् नही हूँ ।

लड़का––इसका क्या मतलब, शक्तिमान् नही हो, हमारा काम तो तुम करते हो । करते हो या नही ?

बढ़ई––हा, मै तुम्हारा काम करता हूँ, पर अपना काम नही कर सकता ।

लड़का––क्यों नही मुझे तुम्हारी पहेली समझ म नही आती । मुझे समझाओ ।

बढ़ई––प्यारे बच्चे ! जब तुम बडे होगे, तब समझ जाओगे । मै तुम्हारे लिए काम कर सकता हूँ, पर अपने लिए नहीं ।

लड़का––पर क्यों ?

बढ़ई––क्योंकि मुझे अपने काम के लिए लकड़ी की जरूरत है, और मेरे पास कोई लकडी नही है । मुझे खरीदनी

पड़गी। मेरे पास दाम नहीं कि उसे खरीदूं। अब मैं तुम्हारा काम कर रहा हूँ। तुम्हारी माँ मुझे इसकी मंजूरी देंगी। उनसे कहो कि मुझे ज़रा ज़्यादा मंजूरी दें। तब मैं छत के लिए लकड़ी खरीद लाऊँगा और उसे तैयार कर पाऊँगा।

लड़का—पर क्या तुम्हारा अपना जंगल नहीं है।

बढ़ई—हमारे यहाँ जंगल तो इतना बड़ा है कि तीन दिन तक बराबर चलते जाओ और किनारा न मिले। पर मुश्किल यह है कि वे पेड़ हमारे नहीं हैं।

लड़का—पर माँ तो कहती थीं कि हमारे जंगल के कारण ही हमें सबसे ज्यादा परेशानी उठानी पड़ती है। उनको इनके कारण बड़ी मुसीबत है।

बढ़ई—हाँ, यही तो दुःख की बात है। तुम्हारी माँ की मुसीबत इसलिए है कि तुम्हारे जंगल बहुत बड़े हैं, पर मेरी मुसीबत यह है कि हमारे पास अपना कोई जंगल ही नहीं है। अरे, मैं तुमसे बात करने में अपना काम भूल गया। मेरे जैसों को इसके लिए कोई प्रशंसा न मिलेगी। (अपना काम जारी करता है)।

लड़का—जब मैं बड़ा होऊंगा तो ऐसी व्यवस्था करूँगा कि सबको एक-सी सुविधा मिले जिससे सबका हिस्सा बराबर हो।

बढ़ई—ईश्वर करे, जल्दी तुम बड़े हो, क्योंकि मैं बहुत दिन न जिऊँगा। पर याद रखना, भूलना नहीं! —अच्छा मैंने अपना रन्दा कहाँ रखा?

बच्चे

(एक महिला और उसके बच्चे [हाई स्कूल मे पढ़ने वाला १४ साल का लडका और तानिखका नामक ५ साल की लड़की] बगीचे मे टहल रहे है। एक बूढी किसान औरत उनकी ओर आती है।)

महिला—क्या बात है, मनरेना ?

बुढ़िया—मालकिन, मै तुम्हारे ही पास आई हूँ ।

महिला—क्या चाहती हो ?

बुढ़िया—कहते शर्म लगती है, पर क्या करूँ। तुम्हारी धर्म-कन्या को फिर बच्चा हुआ है, और उसने मुझे तुमसे प्रार्थना करने को भेजा है कि तुम उसकी धर्म-माता[1] बनना स्वीकार करो।

महिला—लेकिन अभी तो बहुत दिन नही हुए जब उसे एक बच्चा हुआ था ?

बुढ़िया—हाँ, पिछले साल की बात है।

महिला—तुम्हारे कितने नाती नातिनियाँ है ?

बुढ़िया—अरे, इनकी कोई गिनती है ? कोई ले तो मै

१ धर्म-पिता या धर्म-माता उसे कहते है जो बपतिस्मा के समय बच्चे की धार्मिक शिक्षा की जिम्मेदारी लेते है।

उनमे से आधे दे दूँ। सब जरा-जरा से है। एक के बाद एक छोटा। यह दुर्भाग्य है !

महिला--तुम्हारी लडकी को कुल कितने बच्चे है।

बुढ़िया--यह सातवाँ है, और सब जी रहे हैं। क्या अच्छा हो कि ईश्वर इनमे से कुछ को उठा ले !

महिला--तुम क्या बक रही हो ? तुम्हारे मुँह से ऐसी बात कैसे निकलती है ?

बुढ़िया--लेकिन किया जाय ? हम इतने मोहताज है कि पाप करने और दण्ड भोगने को तैयार है। हम पर दया करो बच्चे की धर्म-माता बन जाओ, नही तो ईश्वर साक्षी है, हमारे पास धर्म-शिक्षक को देने के लिए पैसे नही है, हमारे पास खाने को भी पूरा नही है सब बच्चे छोटे है। मेरा दामाद बाहर नौकरी पर है, और घर पर हम दो स्त्रियाँ भर हैं। मै बूढ़ी, और वह सदा बच्चो के फेर मे ? नये-नये पैदा होते जाते है। ऐसी हालत मे वह क्या काम-धाम कर सकती है ? बस, मै ही सब काम करने को बच जाती हूँ। फिर मेरे चारों ओर बच्चों का झुण्ड रहता है जो रोटी के लिए चिल्लाता है।

महिला--क्या सचमुच सात बच्चे है ?

बुढ़िया--ईश्वर मुझे उठा ले यदि न हो ! सबसे बड़ा अब कुछ सँभलने लायक हो रहा है। बाकी सब बहुत छोटे हैं।

महिला--पर वह इतने बच्चे क्यों पैदा करती है ?

बुढ़िया--मालकिन, क्या किया जाय ? दामाद पास के शहर मे नौकर है। छुट्टियों मे घर आता है....और फिर

दोनों जवान है। अगर वह बहुत दूर चला जाय तो अच्छा।

महिला--हाँ, कुछ लोग इसलिए रोते है कि उनको बच्चे नही है या होते भी हैं तो मर जाते हैं, और तुम रो रही हो कि तुम्हारे यहाँ बहुत है।

बुढ़िया--हाँ, बहुत है, बहुत ! उससे कही ज्यादा जितनों के पालन की शक्ति हमारे पास है। हाँ, तो मालकिन हम आशा करे !

महिला--अच्छा ! मैं औरों की धर्म-माता थी। इसकी भी बन जाऊँगी। क्या लड़का है ?

बुढ़िया--हाँ, मालकिन, लड़का है। नन्हा पर स्वस्थ। ज़ोर से रोता है।.....हाँ, तो सस्कार किस समय होगा ?

महिला--जब चाहो रख लो।

(बुढ़िया धन्यवाद देकर जाती है)

तानिखका--माँ, ऐसा क्यों है कि कुछ लोगो को बच्चे हैं और कुछ को नही ? तुम्हारे और मतरेना को है पर पराशा को नही है।

महिला--पराशा का अभी विवाह नही हुआ। बच्चे विवाह के बाद होते है। लोग ब्याह करके पति-पत्नी बनते है तब बच्चे पदा होते है।

तानिखका--सदा ?

महिला--नही, सदा नही। तुम जानती हो कुक को, स्त्री तो है पर उनके बच्चे नहीं है।

तानिखका--माँ, क्या ऐसा नही हो सकता कि जो लोग

बच्चे चाहते हैं उनको बच्चे मिलें और जो नही चाहते उनको न मिलें ।

लड़का -कैसी बाते तुम करती हो ।

तानिखका—इसमें कोई वाहियात बात नही ! मैं समझती हूँ कि अगर मतरेना की लड़की बच्चे नही चाहती तो ऐसी व्यवस्था करना ज्यादा अच्छा होगा कि उसे बच्चे न हों । माँ, क्या ऐसा नहीं हो सकता ?

लड़का—तुम मूर्खतापूर्ण बाते करती हो । तुम इस विषय मे कुछ नही जानती ।

तानिखका—क्यो माँ, क्या ऐसा नही हो सकता ?

महिला—तुम्हें क्या बताऊँ ? हमे नही मालूम......यह ईश्वर के ऊपर निर्भर है ।

तानिखका—पर बच्चे किससे पैदा होते है ?

लड़का—(हँसता है)—बकरी से !

तानिखका--(अप्रतिभ होकर)—इसमे हँसने की कोई बात नही है । मै सोचती हूँ कि अगर बच्चों के कारण, जैसा मत-रेना कहती है, जीना कठिन हो जाय, तो ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि वे पैदा न हों । नर्स (दाई) को कोई बच्चा नही है । कभी नही होता ।

महिला—लेकिन वह विवाहित नही है । उसे कोई पति नही ह ।

तानिखका—उन सबको, जो बच्चे नही चाहती, उसी की तरह रहना चाहिए । नही तो क्या होता है ? बच्चे पदा होते

है, पर उनके पोषण के लिए कुछ नहीं रहता। (महिला लड़के से नजर मिलाती है और चुप है) जब मैं बड़ी होकर विवाह करूँगी तो एसी व्यवस्था करूँगी कि एक लड़का और एक लड़की हो, इससे ज्यादा नहीं। यह ठीक बात नहीं कि बच्चे तो हैं पर उनको प्यार न मिले! मैं अपने बच्चे को कितना प्यार करूँगी! सचमुच माँ, मैं नर्स के पास जाऊँगी और इसके बारे में पूछूँगी।

(चली जाती है।)

महिला - (लड़के से)—हाँ, वह कहावत कैसे है? 'बच्चों के मुँह से'. . अरे भूल रही हूँ—हाँ, 'बच्चों के मुँह से सत्य निकलता है।' तानिखका ने जो कुछ कहा बिलकुल ठीक है। अगर लोग समझते कि विवाह एक महत्त्वपूर्ण बात है, मजाक नहीं है, और यह कि उन्हें अपने लिए नहीं, बच्चों के लिए विवाह करना चाहिए तो हम लोगों को तिरस्कृत और उपेक्षित बच्चों के वीभत्स दृश्य न देखने पड़ें, और मतरेना की लड़की की भाँति बच्चे दु:ख का कारण न होकर आनन्द के कारण बनें।

: २० :

शिक्षा

एक मजूर--

निकोलाय— १५ साल का हाई स्कूल में पढने वाला लड़का।

कातया--उम्र सात वर्ष, निकोलाय का भाई।

उनकी माँ।

(मजूर दरवाजे की मूठो पर पालिश कर रहा है। कातया छोटी ईटो के सहारे मकान बना रहा है। निकोलाय आता है और अपनी किताबे एक ओर फेंक देता है)

निकोलाय--जहन्नुम में जायं ये और इनका वाहियात स्कूल!

मजूर—क्या बात है, भैया?

निकोलाय--बुरा हो उनका, इस बार उन्होंने फिर मुझे एक नम्बर दिया है! फिर झगड़ा होगा। उनका भूगोल मेरे लिए बहुत लाभदायक है। क्लिफोर्निया (कैलिफोर्निया) कहाँ है? मै यह जानकर क्या करूँगा! मै इसे क्यों जानूँ?

मजूर--अब वे लोग तुम्हारे साथ क्या करेगे?

निकोलाय--फिर उसी क्लास मे रोक रखेगे।

मजूर--पर तुम अपना सबक क्यों नही याद करते भैया?

निकोलाय--इसलिए कि मै इन वाहियात बातों को नही याद कर सकता। सबको भाड़ मे जाने दो। (धम मे एक कुर्सी

पर पड़ जाता है) मैं माँ से जाकर कह देता हूँ कि म इस तरह नहीं पढ़ सकता। बस अब खतम है उनकी जो इच्छा हो सो करे, पर मै अब आगे नही पढ़ सकता। और अगर वह मुझे स्कूल से न हटा लेंगी तो कसम खाकर कहता हूँ, मैं भाग जाऊँगा !

मजूर--भागकर कहाँ जाओगे ?

निकोलाय--घर से भागकर जाऊँगा। मै गाड़ीवान या कुली का काम करूँगा ! कोई भी काम इससे अच्छा होगा।

मजूर--भैया, तुम जानते हो कि कुली या मजूर का काम सरल नही है। सुबह उठना, लकड़ी काटना, बोझा ढोना, आग जलाना..... ।

निकोलाय--शी ...(मुँह से सीटी बजाता है) उसमे मौज ह। लकड़ी चीरना बहुत अच्छा काम है। इन बातों से तुम मुझे डरा नही सकते। वह तो बहुत ही बढ़िया काम है। जरा तुम भूगोल सीखने की कोशिश तो करो और देखो !

मजूर--सचमुच ? पर वे तुम्हें इसके लिए मजबूर क्यों करते है ?

निकोलाय--इस क्यों का कोई जवाब नही है। वह एक रिवाज है। वे समझते हैं कि यह जाने बिना लोगों का काम ही न चलेगा।

मजूर--तुम्हें पढ़ना ही चाहिए नही तो तुम अपने पिता या काका की भाँति नौकरी और ओहदा न पा सकोगे।

निकोलाय--पर मान लो, मै वैसा नही होना चाहता तो ?

कातया—हाँ, वह न चाहे तो ?

(माँ हाथ मे एक कागज लिये आती है)

माँ हेडमास्टर ने लिखा है कि इस बार फिर तुम्हे सब मे कम नम्बर मिला है ! निकोलिका इस तरह काम न चलेगा। दो मे से एक बात करनी होगी—या तो पढो या न पढो।

निकोलाय—हाँ, दो मे से एक ही करना होगा। मै न पढूँगा ! ईश्वर के लिए मुझे स्कूल से हटा लो। मै पढ नही सकता।

माँ—क्यो ?

निकोलाय—बस इसलिए कि मै नही पढ सकता। वह मेरे दिमाग मे नही घुसता।

माँ—तुम्हारे दिमाग म इसलिए नही घुसता कि तुम ध्यान नही देते। फजूल की बात छोडकर अपने सबक पर ध्यान दिया करो।

निकोलाय—मै सच कहता हूँ, माँ, मुझे स्कूल छोड़ने दो ! मै और कुछ नही चाहता, सिर्फ इस भयानक पढाई से इस संकट से मुझे मुक्त कर दो। मै इसे बर्दाश्त नही कर सकता !

माँ—पर आखिर तुम करोगे क्या ?

निकोलाय—यह मेरा अपना मामला है।

माँ—नही, तुम्हारा मामला नही है, यह मेरा मामला है। मुझे तुम्हारे लिए ईश्वर के सामने जवाब देना पड़ेगा, मुझे तुम्हें शिक्षित करना ही पड़ेगा।

निकोलाय—पर मान लो, मैं पढ़ नहीं सकता तो ?

माँ—(तेजी से)—क्या बेहूदा बातें करते हो ! मैं तुम्हारी माँ होने के नाते तुमसे अंतिम बार अपील करती हूँ कि तुम नया जीवन शुरू करो और लोग तुमसे जो आशा करते हैं, उसे पूरा करो । अगर तुम मेरी बात न मानोगे तो मुझे दूसरी कार्रवाई करनी पड़ेगी ।

निकोलाय—मैंने तुमसे कह दिया कि मैं पढ़ नहीं सकता और पढ़ना भी नहीं चाहता ।

माँ—निकोलाय, सावधान हो ।

निकोलाय—सावधान होने की कुछ बात ही नहीं ! तुम मुझे क्यों सता रही हो ? तुम समझती नहीं ।

माँ—मुझे इस तरह की बातें करने की जुर्रत न करो तुम इतनी ढिठाई करते हो ? बस, इस कमरे से तुरंत निकल जाओ !

निकोलाय—बहुत अच्छा ! मैं जाता हूँ । मुझे किसी बात का डर नहीं है, और मैं तुमसे कुछ नहीं चाहता । (तेजी से चला जाता है और जाते समय दरवाजा जोर से बंद करता है ।)

माँ—(स्वगत)—इसकी चिंता के मारे मेरी मौत है । मैं जानती हूँ कि यह सब क्यों होता है ? इसीलिए कि वह जरूरी बातों पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकता, वाहियात और बेहूदा बातों से अपना दिमाग भर लेता है ।

कातया—पर माँ तुम्हें याद होगा कि तुम्हीं ने एक कहावत बताई थी कि अकेले कोने में खड़े होकर सफेद रीछ की

बातें न सोचना असभव है ।

माँ—मैं उसके बारे में नही कह रही हू । मैं कह रहा हूँ कि उससे जो कहा जाय उसे सीखना चाहिए ।

कातया—पर वह कहता है कि वह नही सीख सकता ।

माँ—वह फिजूल बकता है ।

कातया—पर वह यह तो नही कहता कि मैं कुछ नहीं करना चाहता; सिर्फ वह भगोल नही पढ़ना चाहता है । वह काम करना चाहता है ।

माँ—अगर वह मजूर का लड़का होता तो मजूर बन सकता था, पर वह तुम्हारे बाप का बेटा है इसलिए उसे पढना ही चाहिए ।

कातया—पर वह पढ़ना जो नही चाहता !

माँ—वह चाहता है या नही, उसे पढ़ना ही चाहिए ।

कातया—पर मान लो, वह नही पढ सकता तो ?

माँ—खबरदार, कही तू भी उसका अनुकरण न करना ।

कातया—पर मैं जरूर करूँगा । जो मैं नही चाहता उसे किसी तरह न पढूँगा ।

माँ—तब तुम एक अज्ञानी मूर्ख बनोगे । (चुप्पी)

कातया—जब मैं बड़ा हो जाऊँगा और मेरे बच्चे होंगे तो कभी पढ़ने के लिए उनपर जबरदस्ती न करूँगा । अगर वे पढ़ना चाहेंगे तो उन्हें पढ़ाऊँगा, पर अगर वे न चाहेंगे तो उन्हें पढ़ने को विवश न करूँगा ।

माँ—जब तुम बड़े होगे तो कोई ऐसी बात न करोगे ।

कातया—अवश्य करूँगा, अवश्य करूँगा ।

माँ—बड़े होने पर न करोगे ।

कातया—मैं अवश्य करूँगा, अवश्य करूँगा, अवश्य करूँगा !

माँ—तब तुम मूर्ख होगे ।

कातया—दाई कहती थी कि ईश्वर को मूर्खों की ही जरूरत है ।